International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-12-2025, Accepted: 25-01-2026, Published: 12-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 113-116

भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक

डॉ लाड़ली कुमारी[1], रज्जन कुमार[2]
[1] एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी डी कॉलेज, पटना, बिहार, भारत
[2] सेवानिवृत्त, सीनियर फ़ेलो–आइ सी पी आर, पूर्व विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष, अनुप्रयुक्त दर्शनशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। यह प्राचीन भारतीय विज्ञान, कला, संस्कृति, भाषाओं और दर्शन को समकालीन शिक्षण विधियों के साथ जोड़कर ज्ञान की समग्र समझ को बढ़ावा देने का अभिनव प्रक्रम है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जिसे अंग्रेजी में Indian Knowledge Systems (IKS) कहा जाता है, भारत की समृद्ध ज्ञान और संस्कृति का एक विशाल भंडार है। यह परंपरा वेदों, उपनिषदों, दर्शन, आयुर्वेद, योग, कला, विज्ञान, और गणित सहित विभिन्न क्षेत्रों को समाहित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य न केवल ज्ञान का प्रसार करना है, बल्कि युवा शक्ति के साथ–साथ छात्रों का सर्वांगीण विकास करना और उन्हें सामाजिक रूप से उपयोगी बनाना भी है।

मूल शब्दः ज्ञान, विज्ञान, लौकिक, पारलौकिक, कर्म, धर्म, भोग, त्याग, सर्वांगीण, विकास

प्रस्तावना
भारतीय ज्ञान परम्परा का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देना है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के माध्यम से ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक व्यवस्थित रूप से हस्तांतरित होता है। यह एक प्रथा न होकर, ज्ञान हस्तांतरण की एक संगठित प्रणाली और विधि है। भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान और प्रज्ञा का अद्भुत समन्वय जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का सम्मिलन है जिसे समग्र ज्ञान प्रदान करने का अक्षय स्रोत कह सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा और मूल्य–केंद्रित शिक्षा पद्धति
ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था (ऋग्वेद, 10/71/7)। छात्रों को मानव, प्राणियों एवं प्रकृति के मध्य संतुलन को बनाए रखना सिखाया जाता था। शिक्षण और सीखने के लिए वेद और उपनिषद के सिद्धांतों का अनुपालन जिससे व्यक्ति स्वयं, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा कर सके, इस प्रकार जीवन के सभी पक्ष इस प्रणाली में सम्मिलित थे। शिक्षा प्रणाली ने सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान केंद्रित किया। कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए। इसके अतिरिक्त जो भी कर्म हैं वह सब निपुणता देने वाले मात्र हैं (विष्णु पुराण, 1/9/41)। शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तदनुरूप ही विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। घर, मंदिर, पाठशाला तथा गुरुकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी। उच्च ज्ञान के लिए छात्र विहार और विश्वविद्यालयों में जाते थे तथा शिक्षण अधिकतर मौखिक था, छात्रों को कक्षा में जो विषय पढ़ाया जाता था उसको वो याद कर मनन करते थे।
प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थीं। पुराण में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है (ब्रह्माण्ड पुराण, 1/4/15)। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रसिद्धि थी जिसमें मैत्रेयी, ऋतम्भरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि जैसे नाम प्रमुख थे। बोधायन, कात्यायन, आर्यभट्ट, चरक, कणाद, वाराहमिहिर, नागार्जुन, अगस्त्य, भर्तृहरि, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद जैसे अनेकानेक महापुरुषों ने भारत भूमि पर जन्म लेकर अपनी मेधा से विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्ध हेतु अतुल्य योगदान दिया है।
"जो मैं जानता हूँ, उसे ही जानता हूँ; जो मैं नहीं जानता, उसे नहीं जानता हूँ। यही ज्ञान है"। भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान के इस भावपरक उद्घोष जिसमें अविद्या से विद्या, अंधकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान के प्राप्तव्य का आदर्श निहित है; ज्ञान और प्रज्ञा का अद्भुत सम्मिलन है जो मूल्य–केंद्रित शिक्षा का आधार वाक्य है। शिक्षा का यह भाव मानक बनकर युवाओं के मन, भाव और विचार को एक दिशा प्रदान करने में अग्रसर रह सकता है। इस प्रकार के विचार युवा वर्ग में राष्ट्र प्रेम का अलख जगाकर, ज्ञान एवं कौशल का चेतना जाग्रत करने का आधार बना कर इस समृद्ध विरासत को आत्मसात करके छात्रों को मानव, प्राणियों एवं प्रकृति के मध्य संतुलन को बनाए रखना सिखाया जा सकता है। शिक्षण और सीखने के लिए वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य तथा अन्य नैतिकपरक ग्रंथों में उद्धृत सिद्धांतों का अनुपालन कर व्यक्ति स्वयं, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा कर सके, इस प्रकार जीवन के सभी पक्ष इस प्रणाली में सम्मिलित किए जा सकते हैं जो मूल्य–केंद्रित शिक्षा प्राप्त करने का अनुपम साधन से युक्त है। यही भारतीय ज्ञान परम्परा की मूल्य–केंद्रित शिक्षा पद्धति का वैशिष्ट्य है।

भारतीय ज्ञान परम्परा, सनातन और समावेशी संस्कृति
सनातन एक समावेशी जीवन पद्धति है जो मानवोचित मूल्यों पर आधारित, भेदभाव रहित सर्वसुलभ और सर्वव्यापी है। यह सभी को स्वयं में समाहित कर एक सम्मान पूर्ण एवं नैतिक जीवन यापन का संदेश देती है जिसमें आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति का समान अवसर सभी को प्राप्त होता है। यह सभी मानव यहां तक कि सभी जीव को जीवन जीने का और विकास करने का समान अवसर प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करती है। सनातन

को यदि धर्म कहा जाए तो यह धर्म किसी एक का धर्म नहीं है अपितु यह पूरे मानव जाति का धर्म है। समय एवं स्थान के साथ इस सनातन धर्म में कई धर्मों का सम्मिलन हुआ है। कुछ विशेषताओं को इस सनातन ने अपनाया कुछ अन्य ने इस सनातन की विशेषताओं को स्वीकार लिया। इस परस्पर स्वीकार्यता ने सनातन के साथ–साथ अन्य धर्मों की प्रकृति एवं स्वरुप में परिवर्तन किया परंतु सभी धर्मों का उत्स उसके मूल स्वभाव में ही निहित रहा। आज यह परिवर्तन ही धर्मो के मध्य विवाद और चुनौती का कारण बना। हम यहाँ यह भूल गए कि परिवर्तन प्रकृति प्रदत्त वरदान है। यही परिवर्तन सृष्टि का जनक है। अतः इस परिवर्तन से कोई भी अछूता नही रह सकता स्वयं सनातन धर्म भी नहीं। अतः हम यह मान सकते हैं कि जितने भी सम्प्रदाय, पंथ अथवा धर्म भारत में फले–फूले उनकी जडें सनातन ही हैं। यह ठीक है कि वे नए–नए नामों एवं रुपों के साथ–साथ नई मान्यताओं एवं परम्पराओं द्वारा प्रकट हुए। इसी कारण सनातन धर्म शाश्वत धर्म कहलाया जिसमें मानवोचित मूल्य आधारित समावेशी जीवन क्रिया विधि का सम्मिलन हुआ है।

भारत की सनातन–सांस्कृतिक परंपरा समावेशी, करुणा प्रधान एवं समता मूलक रही है। समय के झंझावातों, विदेशी आक्रांताओं के प्रहारों और तकनीक की चकाचौंध ने इसके वाह्य स्वरूप को प्रभावित अवश्य किया है लेकिन मूल रूप में समस्त चराचर जगत् को स्वयं का रूप मानने की भारतीय–दृष्टि आज भी लोक जीवन में अपना स्थान बनाए हुए है। प्रो रजनीश कुमार शुक्ल की पुस्तक "भारतीय ज्ञान परम्परा और विचारक" में भारतीय समाज, इतिहास, संस्कृति, राष्ट्र–निर्माण, आत्मनिर्भरता, पत्रकारिता आदि विषयों को सारगर्भित तरीके से प्रस्तुत करती है और ऐसा करते हुए वह गौतमबुद्ध, कबीर, तुलसीदास, गांधी, विनोबा, आंबेडकर, वीर सावरकर और पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे मनीषियों को उद्धृत करते हैं, जिससे उनके विचार एक सनातन ज्ञान परंपरा के वाहक के रूप में दिखलाई देते हैं। आचार्य रजनीश कुमार शुक्ल ने इस कृति में भारतीय ज्ञान परंपरा को उसके वर्तमान व्यापक संदर्भ में देखा है। वे अपनी परिपुष्ट दार्शनिक पृष्ठभूमि के कारण प्राचीन भारतीय चिंतन के विविध आयामों पर अधिकार रखते हैं तथा समकालीन पश्चिमी विचार और दर्शन के साथ–साथ आधुनिक भारतीय दर्शन एवं चिंतन पर भी उनकी वैसी ही पकड़ है। यह पुस्तक एक नई बहस को आरंभ करेगी।

प्रो रजनीश शुक्ल के विचार को उद्धत एवं समर्थन करते हुए प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी कुलाधिपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का कहना है कि पिछले दो दशकों में पूरे विश्व की सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक संरचना में व्यापक बदलाव आया है। इस परिदृश्य में भारत एक बार फिर से विश्वगुरु बन सकता है—इसमें कोई संदेह नहीं है। हालाँकि कुछ लोग असहमत हो सकते हैं। राष्ट्रीय चिंतक यह मानते हैं कि भारत की सांस्कृतिक विशिष्टता में विश्व गुरु बनने के बीज–तत्त्व विद्यमान हैं। यहाँ का जन अपनी पहचान से भारत को विशिष्ट बनाए हुए है। भारतीय चिंतन और भारतीय दृष्टि मनुष्य को एक संपोष्य जीवन प्रणाली दे सकती है और यही वह कारण है जिससे भारत को विश्वगुरु बनना ही है, इसे कोई रोक नहीं सकता है।

प्रो मनोज सिंह ने "वैदिक सनातन हिन्दू" पुस्तक सनातन के संबंध में यह बताने का प्रयास किया है कि सनातन वह जीवन–दर्शन है, जो प्रकृति को वश में करने का समर्थन नहीं करता। यों तो प्रकृति को पराजित करके उस पर कब्जा करना संभव नहीं। मगर इस तरह की सोच आसुरी चिंतन है, जबकि सनातन दैवीय चिंतन है। यहाँ इंद्रियों को वश में करने की बात होती है। सनातन लेने की नहीं देने की संस्कृति है। सनातन मृत नहीं, जीवंत है। स्थिर नहीं, सतत है। जड़ नहीं चौतन्य है। सनातन जीवन–दर्शन भौतिक, शारीरिक, पारिवारिक, सामाजिक से ऊपर उठकर आत्मिक, आध्यात्मिक और त स्तर पर भी संतुष्ट करता है। यह उपभोग की नहीं उपयोग की संस्कृति है। यह लाभ–लोभ की नहीं, त्याग की संस्कृति है। यह भोग की नहीं, मोक्ष की संस्कृति है। यह बाँधता नहीं, मुक्त करता है। सनातन हिंदू, भक्षक नहीं, प्रकृति रक्षक होता है। वैदिक सनातन हिंदुत्व एक प्रकृति संरक्षक संस्कृति है। 'मैं सनातनी हूँ' कहने का अर्थ ही होता है 'मैं प्रकृति का पुजारी हूँ'। सनातन जीवन–दर्शन दानव को मानव बनाता है, मानव को देवता और देवता को ईश्वर के रूप में स्थापित कर देता है। सनातन सिर्फ स्वयं की बात नहीं करता, सदा विश्व की बात करता है। सिर्फ आज की बात नहीं करता, बीते हुए कल का विश्लेषण कर आने वाले कल के लिए तैयार करता है। इसलिए शाश्वत है, निरंतर है। भारतीय ज्ञान परम्परा सनातन के इसी भाव को प्रस्तुत करती है और यह स्पष्ट करती है कि आधुनिक मानव को समग्र और समावेशी विकास के लिए सनातन के इस मूल मंत्र को पकड़ना होगा ।

भारतीय ज्ञान परम्परा और हिंदी साहित्य

भारतीय ज्ञान परंपरा का हिंदी साहित्य में गहरा प्रभाव रहा है। यह परंपरा वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शनशास्त्र, और अन्य प्राचीन ग्रंथों से विकसित हुई है, जिनमें जीवन, धर्म, नैतिकता, और समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि में रचित ज्ञान साहित्य मुख्यतः विद्वानों तक सीमित था, जबकि हिंदी साहित्य ने इसे आमजन तक पहुँचाया। हिंदी साहित्य में लोक जीवन, लोक संस्कृति, और सामाजिक सरोकारों का अधिक समावेश हुआ। हिंदी साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा को अधिक व्यावहारिक, सरल और भावनात्मक रूप में प्रस्तुत किया।

हिंदी साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने विभिन्न आधारों पर कालों में विभाजित किया है। सर्वाधिक मान्य विभाजन डॉ. रामचंद्र शुक्ल द्वारा प्रस्तुत है।

आदिकाल (वीरगाथा काल)

इसमें वीरगाथा काव्य, रासो काव्य, और धार्मिक साहित्य की प्रधानता रही।

भक्तिकाल

इसमें भक्ति आंदोलन के प्रभाव से संत काव्य, निर्गुण–सगुण भक्ति, रामकाव्य, कृष्ण काव्य आदि की रचनाएँ हुईं।

रीतिकाल

इसमें शृंगार रस, नायिका–भेद, अलंकार, रीति–नायिका आदि विषयों पर काव्य रचना हुई।

आधुनिक काल

इसमें खड़ी बोली का विकास, राष्ट्रीय चेतना, छाया वाद, प्रगति वाद, प्रयोग वाद, नई कविता, कहानी, उपन्यास आदि विधाओं का विकास हुआ।

हिन्दी साहित्य के इस काल विभाजन का आधार साहित्य की प्रवृत्तियाँ, भाषा–शैली, सामाजिक–राजनीतिक प्रभाव आदि माने जा सकते हैं परंतु इन सबके संबंध तात्कालिक धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक विचार एवं सिद्धांत तथा शिक्षा व्यवस्था को भी जाता है। वेद, उपनिषद, और भगवद्गीता जैसे ग्रंथों के विचार हिंदी साहित्य में निहित हैं, जो साहित्य को आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। नैतिक और मूल्यपरक शैक्षिक परंपरा में नैतिकता और जीवन मूल्यों का समावेश हिंदी साहित्य के माध्यम से समाज तक पहुंचा। तुलसीदास, सूरदास, और कबीर जैसे संत कवियों ने इसे सरल भाषा में प्रस्तुत किया। संस्कृत, पालि और प्राकृत से प्रभावित होकर हिंदी साहित्य ने अपनी भाषा

और शैली विकसित की, जिसमें ज्ञान परंपरा के तत्व स्पष्ट रूप से संकलित हुए जिसने जनमानस को एक नई दिशा प्रदान किया।

भारतीय ज्ञान परम्परा के सौजन्य से हिन्दी साहित्य का ना केवल भारतीय जनमानस अपितु सम्पूर्ण विश्व जगत पर दूरगामी प्रभाव पडा:

- लोक भाषा साहित्य का विकास हुआ
- धर्म और अध्यात्म के मर्म को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया
- भक्ति एवं रस के अलंकृत भाव को सहज और सरल बनाया गया
- संगीत और नृत्य को धार्मिक काव्य से जोड़ा गया
- समाज में भाईचारा को बढ़ावा मिला
- धार्मिक सहिष्णुता और समरसता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया

अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय साहित्य का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा है जहां वेद सबसे पुराना ग्रंथ है। ऋग्वेद यज्ञ एवं कर्म कांड पर बल देता है वहीं उपनिषद दार्शनिक समझ एवं समस्या का समाधान देता है। पुराण और स्मृति सामाजिक रीति–रिवाज तथा लौकिक व्यवस्था संबंधी नियम और मर्यादा के अनुपालन की बात करते हैं तो रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य राजनीति, प्रेम, नैतिक आदर्श की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। मध्यकालीन भक्ति काव्य के रचनाकार तुलसी, कबीर, मीरा आदि ने सगुण और निर्गुण भक्ति परंपरा का पाठ पढ़ाया और "ढाई आखर" जैसे प्रेम काव्य को रचकर मनुष्य को नैसर्गिक रस का रसास्वादन एवं मानवता का पाठ याद कराया। यह सभी तथ्य साहित्य सर्जना के भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को उजागर करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति

भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदैव सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। यहॉ शिक्षा का अर्थ सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रुप में ज्ञान अर्जन नहीं अपितु पूर्ण आत्म ज्ञान और मुक्ति का प्रारुप माना गया है। दार्शनिक और आध्यात्मिक मूल्य से ओतप्रोत नई शिक्षा नीति 2020 ने कई लक्ष्य एवं अपेक्षाओं का निर्धारण किया है जिसका मूल मंतव्य सभी को अपनी समृद्ध विरासत के ज्ञान के साथ–साथ विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कई तरह के एजेंडे हैं जिन्हें प्राप्त करने के लिए समयबद्ध नीति एवं कार्यक्रम का निर्धारण किया गया है। इनमें से कुछ को यहा प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत द्वारा 2015 में सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य के रुप में वैश्विक शिक्षा विकास योजना के अनुसार विश्व में 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य रखा गया है। इस हेतु संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को समर्थन और अधिगम को बढ़ावा देने के लिए पुनर्गठित करने की आवश्यकता होगी ताकि सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उत्स 2040 तक शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्य को प्राप्त करना है। 2040 तक भारत की शिक्षा प्रणाली विश्व की किसी भी शिक्षा प्रणाली से पीछे नहीं रहेगी। यह ऐसी शिक्षा व्यवस्था होगी जहां किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित शिक्षार्थियों को समान रुप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी। यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है तथा भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख वैशिष्ट्य भारतीय भाषाओं को महत्व प्रदान करना रहा है। इसीलिए अभियांत्रिकी, चिकित्सा तथा इसी तरह के अन्यान्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों सहित लगभग सभी विषयों के पाठ्यक्रमों में भारतीय भाषा का विकल्प रखा गया है। अभिभावकों एवं शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु संवेदनशील बनाने की योजना है। इस शिक्षा नीति के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। अकादमिक और अन्य क्षमताओं में सर्वांगीण विकास पर पूरा ध्यान देने का उल्लेख है। रटकर परीक्षा पास करने वाली प्रवृत्ति को इस शिक्षा में नकारा गया है। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को प्राथमिकता प्रदान की गई है। अवधारणात्मक समझ पर जोर देने वाली शिक्षा नीति को विकसित करने का प्रयास किया गया है जिसका मूल उद्देश्य तार्किक निर्णय एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मक और तार्किक सोच वाली शिक्षा को विकसित किया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुसंधान एवं नवाचार को महत्व प्रदान किया गया है। शिक्षक के सम्मान को पुर्नजीवन प्रदान करने का प्रयास किया गया है। शिक्षा ही नागरिकों को अगली पीढी के लिए तैयार करती है और इस दिशा में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस नीति द्वारा शिक्षकों को सक्षम बनाने के लिए हर संभव कदम उठाए गए हैं। हर स्तर पर योग्य, चरित्रवान एवं होनहार शिक्षक के चयन के प्रयास की योजना है। इस नीति का उद्देश्य ऐसे अच्छे इंसानों का विकास करना है जिसमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति और नैतिक मूल्य का समावेश हो तथा संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान कर सके। इस दिशा में भारतीय ज्ञान परंपरा बेजोड़ है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान और प्रज्ञा का ऐसा प्रतीक है जिसमें वैज्ञानिक सोच और दृष्टिकोण का एक समृद्ध स्रोत निहित है। यह एक ऐसी सतत प्रणाली है जो ज्ञान को पीढी दर पीढी स्थानांतरित करने में सक्षम है। अतएव भारतीय ज्ञान परंपरा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने और उसे आधुनिक संदर्भ में लागू करना समीचीन और प्रासंगिक है।

संदर्भ एवं अध्ययन

1. अर्जुन कश्यप चौबे (अनु. 1964): धर्मशास्त्र का इतिहास, म. प्र. हिन्दी अकादमी, भोपाल
2. आचार्य बलदेव उपाध्याय (1987): संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी
3. डा. गोपीनाथ कविराज (1964): भारतीय संस्कृति और साधना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना
4. डा. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी (1990): पुराणतत्वमीमांसा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी
5. डा. सरोज शर्मा (संपा. 2023): भारतीय ज्ञान परंपरा: विविध आयाम, शिप्रा पब्लि. दिल्ली
6. नरेंद्र मोहन (2017): भारतीय संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

7. प्रो मनोज सिंह (2020): वैदिक सनातन हिन्दू, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
8. प्रो रजनीश कुमार शुक्ल (2021): भारतीय ज्ञान परम्परा और विचारक, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
9. प्रो रजनीश कुमार शुक्ल (2023): भारत बोध सनातन और सामयिक, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
10. संबंधित साईट: चौटजीपीट
11. विकीपेड़िया
12. रेसेरचगेट